न्यूं सुण कै बाह्मण राज्जी कोन्यां होए। बोल्ले, "म्हाराज! पहल्यां जो रूप देख्या था उसमैं नरोगता थी अर बनावट भी ना थी। पर ईब तै यो रूप बनावट नै घेर राख्या सै। ईब ओ रूप कोन्यां जो पहल्यां था।" राज्जा इस जुआब नैं सुण कै हैरान होया। बोल्या, "पर मेरा सरीर तै ओ-ए सै। फेर थम ईसी बात क्यूकर कहो सो?"

"ईब थारा सरीर बेमारियां का घर हो लिया सै। जै अकीन ना आता हो तै थम माड़ी वार पाछै आपै-ए देख लियो। सच्चाई का बेरा पाट ज्यागा।"

राज्जा नैं बाह्मणां की बात्तां पै कती इतबार कोन्यां आया। फेर भी भित्तर-ए-भित्तर सोच्ची–माड़ी वार देख ल्यूं। इसमैं मेरा के जा सै? राज्जा बोल-बाला बैठ ग्या। माड़ी वार पाछै राजा नैं आपणे हाथ पां देक्खे तै सरम की मारी उसका सिर तले नैं हो ग्या। सारा सरीर काला पड़ लिया था। सुथराई बेरा ना कित चाल्ली गई थी। राज्जा कै कोढ़ फूट्याया था। किस्से नैं भी राज्जा के सरीर की इस हालत पै यकीन कोन्यां होवै था पर सच्चाई तै सच्चाई-ए थी। राज्जा नै आपणा सरीर आच्छी तरियां देख्या। यो ओ हे सरीर था जिसकी बड़ाई करते-करते दुनिया बौली हो लिया करै थी। आज उस्से सरीर मैं कै बांस आण लाग री थी। कोए बड़ाई करण तै दूर, उसके कान्नी लखावै भी ना था। बाह्मण चले गये।

सनत्कुमार नै जिब्बै-ए ग्यान होया अक, जिस सुथराई पै मन्नै घमण्ड था, आज वा हे बदलगी। जुकर यो सरीर भी मेरा कोन्यां होया न्यूं-ए या दुनिया भी कद्दे किस्से की ना होती। उसका भित्तरला उसनैं बार-बार बिरागी बणन नै कैह् था।

राज्जा नैं हाल्लो-हाल फैसला कर्‌या– "ईब मन्नैं राज-पाट छोड़ कै सादूधू बणना सै"। उस नैं जिब्बै-ए राज छोड़्या अर जंगल की राही पकड़ ली। ईब ओ सादूधू बण ग्या। उसके शरीर मैं रोग फैलता-ए चल्या गया। कष्ट भी बढ़ता-ए चल्या गया पर तिपस्या की राही तै ओ माड़ा सा भी कोन्यां डिग्या। आपणे धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्‌या। उस नैं घणी -ए सिदूधी मिल गी। घमण्ड उस तै घणा दूर था। ना कद्‌दे उसनै बेमारियां की चिन्ता करी अर ना कद्‌दे आपणी सिद्धियां पै घमण्ड कर्‌या। उसकै तो बस एक-ए धुन थी–केवल ग्यान हासिल करणा सै।

देवां के राज्जा इन्दर नैं देख्या–सनत्कुमार मुनि करड़ी तिपस्या करण मैं लाग रे सैं। इन्दर नै फेर आपणी सभा मैं सनत्कुमार की तिपस्या की घणी-ए बड़ाई करी। विजय अर वैजयन्त नाम के देवां नैं फेर सक कर्‌या अर फेर सनत्कुमार का हिंतान लेण लिकड़ लिए।

दोन्नूं देवां नैं ईब कै बैद का भेस बणाया। सनत्कुमार मुनी धोरै पहोंचे। उन तै रोग का इलाज करण की कहण लाग्गे। मुनी सनत्कुमार तो समता धारे बैट्‌ठे थे। सरीर की उन नैं माड़ी सी भी परवा ना थी। बैद बार-बार कहण लाग्गे तै वे बोल्ले, "सरीर के रोग दुआइयां तै ठीक हो सकैं सैं पर करमां के रोग्गां नैं दुआई के ठीक कर सकै सै ?" बैद चुप हो गे। उनके धोरै करमां के रोग्गां की दुआई थोड़े ए धरी थी जो मुनी जी तै दे देंदे ?

बैदां की सिमझ मैं कुछ भी ना आया। मुनी जी नै आपणे मूं मैं आंगली दी। आंगली पै लाग्या थूक सनत्कुमार मुनी नैं आपणे सरीर पै लाया तै जाद्‌दू-सा हो ग्या। ईब सरीर सोन्ने बरगा हो लिया था। बैद हैरान रह्‌गे। उनके मन के सुआलां का जुआब देंदे होए, मुनी जी कहण

लाग्गे, "सरीर के रोग मेट्टण खात्तर तै मेरे धोरै घणी-ए सिद्धी सैं। पर सरीर तै मेरा कोए भी मतबल कोन्यां। यो बेमार रहै अक ठीक रहै, मन्नैं के! मैं आत्मा पै चढ़्ढा होया करमां का मैल धोणा चाहूं सूं। या तो मेरी कमअकली थी अक ईब ताईं मैं सरीर के रूप नैं-ए देखदा रहृया।"

मुनी जी की या बात सुण कै बैद सिमझ गे-यो मुनी आपणे बरतां तै डिग्गै कोन्यां।

वे देवलोक मैं पहोंचे। इन्दर तै माफी मांगते होए बोल्ले, "म्हाराज! थमनैं सनत्कुमार मुनी की बाबत जो कहृया था, ओ हम आपणी आंख्यां तै देख आए। साच्चें-ए उनकी जिनगी धन्न सै। ईब तै उनमैं सरीर के रूप की इच्छा भी कोन्यां। वे तै आतमा की सुथराई हासल करणा चाहृवैं सैं। जै ईसी-ए तिपस्या वे करते रहे तै जरूर कामयाब होवैंगे।"

ओड़ै जो ओर देव बैट्ठे थे, उन नैं भी भित्तर-ए-भित्तर मुनी सनत्कुमार के साच्चे अर मजबूत बरतां की बडाई करी अर ओड़ै तै-ए उनकी बंदना करी।

❑❑

साद्धू का सतसंग

केकय देस का राज्जा था– परदेसी। उसके पड़ोसी देस कुणाल का राज्जा था – जितसतरू। दोनूं राज्जा आपस मैं ग्हैरे अर करड़े ढब्बी थे। दोन्नुआं की सोच-सिमझ मैं अर उनके बिचारां मैं घणा-ए फरक था। राज्जा परदेसी जिद्दी अर घमण्डी था। धरम-करम नैं जाण्या ना करदा अक यो भी किम्मै चीज हो सै। जितसतरू सरल सुभा का अर सूधा माणस था। धरम के काम्मां मैं उसकी पूरी दिलचस्पी थी।

जो कोए इन दोनुआं के मित्तर-परेम की बात सुणता उस्सै नैं अचम्भा होंदा।

एक बर राज्जा परदेसी आपणे मंतरी चित्त तै बोल्या, "मैं न्यूं चाहूं सूं अक तू म्हारी ओड़ तै म्हाराज जितसतरू तै कोए चीज भेंट कर्या। उसके राज मैं एक तै एक ग्यानी-ध्यानी र्हैं सैं। उनके धोरै थोड़े दन टैर कै राजनीती पढ़ ले।" राज्जा का हुकम सुण कै मंतरी कुणाल देस कान्नी चाल पड्या।

ओड़ै पहोंच कै ओ राज्जा तै मिल्या। उस तै राज्जा परदेसी का संदेस सुणाया। कीमती चीज भेंट करी। राज्जा नैं मंतरी के ठहरण का इंतजाम करा दिया।

एक दन चित्त नैं बेरा पाट्या, भगवान पारस नाथ की परम्परा के ज्ञानी अचार्य सरमण केस्सी ओड़ै आण आले सैं। उनके आण का टैम भी आ ग्या। जिसनैं भी खबर सुणी, ओ-ए अचार्य केस्सी के दरसनां

खात्तर बेचैन हो ग्या। चित्त भी उनके दरसन करण चाल पड़्या। उनकै धोरै पहोंच्या। हज्जारां की तदाद मैं लोग कट्ठे हो रहे थे। उनकी मीट्ठी बाणी सुण कै मंतरी चित्त पै घणा-ए असर होया।

बस! उस्सै टैम चित्त नै अचार्य केस्सी तै घरेसत (सरावग) धरम के बारां बरत ले लिए। ओ नित्त-नेम उनकी बाणी सुणता। ग्यान की बात बूझता। अचार्य जी की बाणी तै उसके जीण का तरीका बदल ग्या।

एक दन चित्त नैं अचार्य केस्सी तै कही – कदे म्हारे केकय देस की राजधानी स्वेताम्बका नगरी मैं भी पधारण की किरपा करो। अचार्य जी चुप रहे। चित्त नैं कई बर बिनती करी। अचार्य जी फेर भी बोल-बाले उसके कान्नीं देखदे रहे। चित्त समझ ग्या, अचार्य केस्सी राज्जा परदेसी के बुरे बरताव नै जाणैं सैं। वे कोन्यां चाहूते अक घमण्ड मैं चूर परदेसी धरम की अर संघ की बेसती करै।

चित्त स्वेताम्बिका नगरी मैं उलटा आग्या। ओ चाहूवै था – राज्जा परदेसी एक बर........बस एक बर अचार्य केस्सी के दरसन कर ले। के बेरा उसकी ज्यंदगी बदल ज्या।

संजोग इसा होया, एक बर घूमते-टहलते अचार्य केस्सी स्वेताम्बका नगरी मैं आ गे। मंतरी नैं बेरा पाट्या, ओ जिब्बै उनकी सेवा मैं हाज्जर हो ग्या। उस नैं मुनियां के ठैरण का आच्छा एंतजाम करा दिया। आप भी उनकी सेवा मैं लाग्या रहंदा। उनके दरसनां खात्तर लोग्गां की भीड़ लाग्गी रहंदी।

मंतरी चित्त नैं सोच्ची, किस्से तरियां राज्जा परदेसी नै भी अचार्य जी धोरै ले चालणा चहिए। फेर उसनैं एक तरकीब सोच्ची।

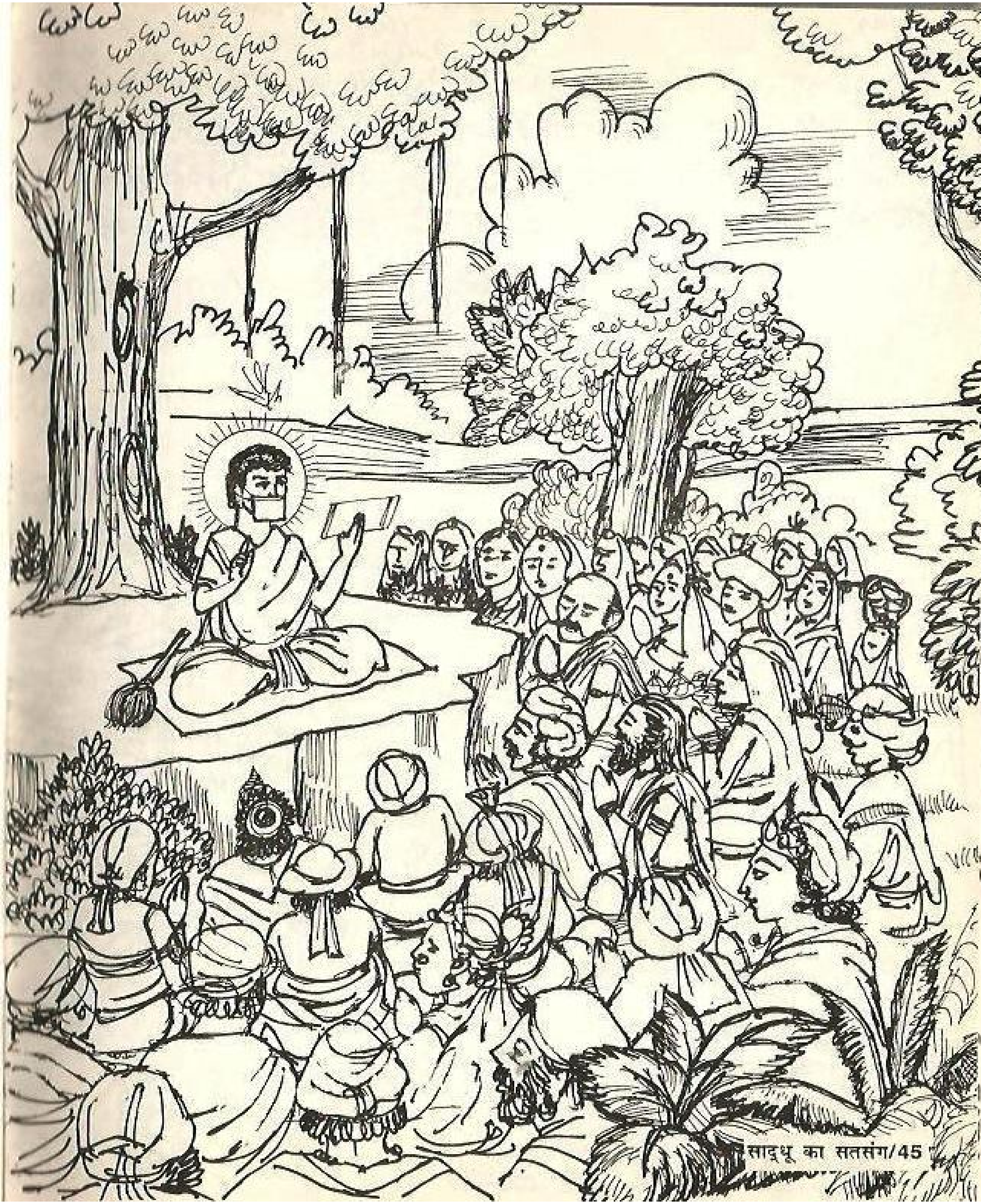

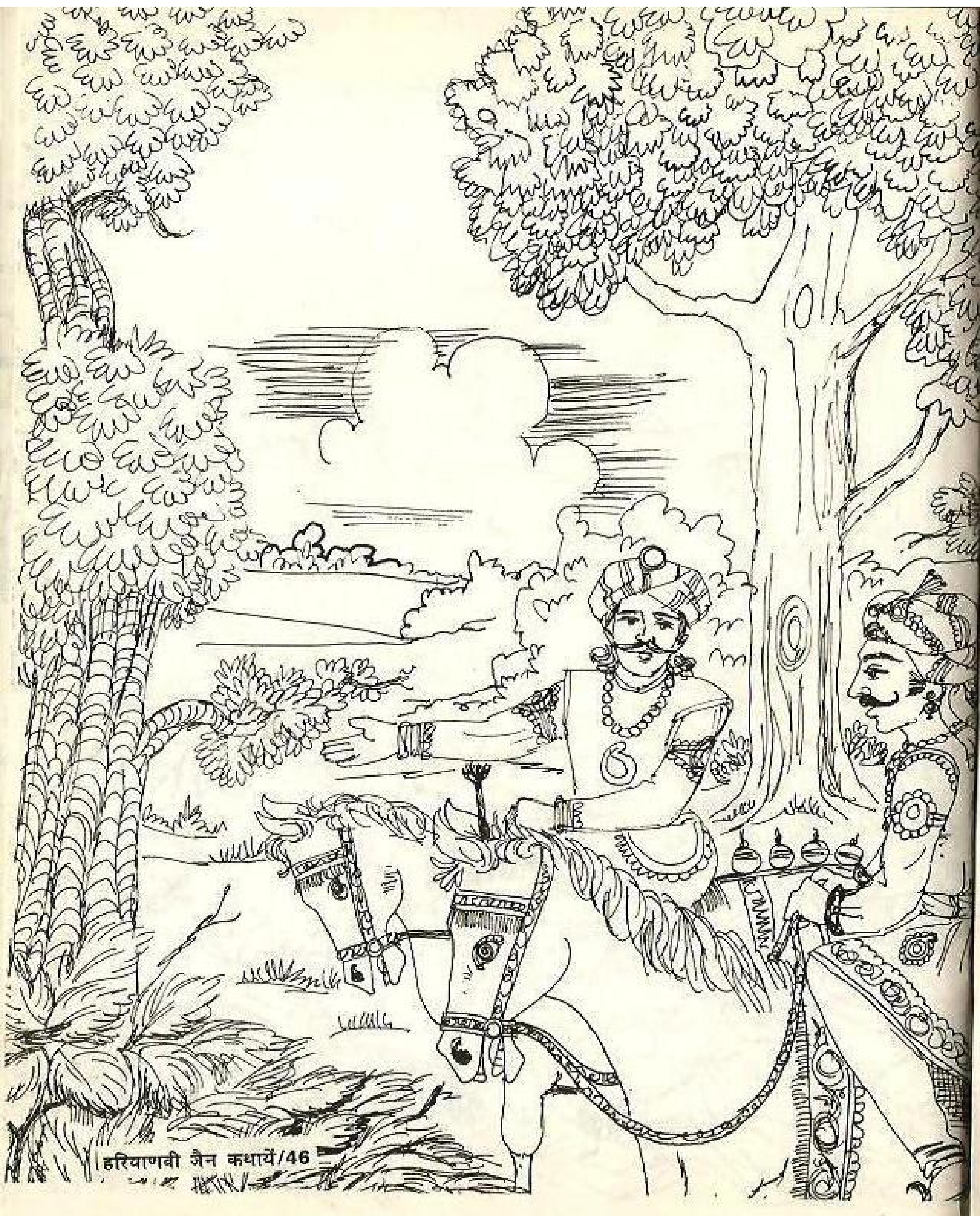

एक दन चित्त नैं राज्जा तै कही, "म्हाराज! थोड़े दन पहल्यां घणे-ए बढिया घोड़े मोल लिए थे। थम उन नैं देख ल्यो तै बढिया रूहै।" राज्जा घोड़े देखण नैं राज्जी हो ग्या। जिब्बै-ए मंतरी गेल्यां चाल पड़्या। मंतरी उस नै मिरग बन कान्नीं ले ग्या। ओड़े अचार्य केस्सी का धरम-बखाण होण लाग रूह्या था।

यो देख कै राज्जा चौंक्या। बोल्या, "आड़े कित ली आया मन्नैं? चाल.... तावला चाल आड़े तै।"

राज्जा अर मंतरी चाल पड़े। माड़ी-सी दूर जा कै राज्जा नैं घोड़ा रोक दिया। कहण लाग्या, "मेरा आग्गै जाण नैं जी-ए कोन्यां करदा। मन्नै तै इसके मिट्ठे बोल याद आवैं सैं। बेरा ना इस साद्धू नैं मेरे पै के जाद्दू कर दिया! इस तै मिल्लण का जी करण लाग्या। मन्नै तै यो पहोंच्या होया साद्धू लाग्गै से।"

मंतरी न्यूं सुण कै राज्जी हो ग्या। सोच्ची, राज्जा के बिचार ईब बदलण आले सैं। ओ आपणी सकीम की कामयाबी पै भित्तर-ए-भित्तर राज्जी होण लाग रूह्या था।

दोन्नूं अचार्य केस्सी की सभा मैं गए। राज्जा की निग्हा अचार्य केस्सी कान्नीं चुम्बक की तरियां खिंच गी। राज्जा नैं सुणी- 'यो संसार तै झूट्ठा दिखावा सै। असली तै आतमा सै जिसका ग्यान लेणा जरूरी सै।'

बखाण पूरा होया। राज्जा परदेसी नास्तक था। उसके जी मैं आतमा-परमातमा, लोक-परलोक, पुनर जनम, पाप-पुन्न, धरम के बारे मैं घणे-ए सुआल थे। उसनैं अचार्य केस्सी तै उनका जुआब बूज्झ्या।

अचार्य केस्सी सामी ने राज्जा तैं सारी बात खोल-खोल के सिमझाई।

घणी बात के, राज्जा का पेट्टा भर ग्या। फेर भावना मैं भर कै राज्जा बोल्या, "भंते! मन्नैं आपणी सरण मैं ले ल्यो।"

अचार्य केस्सी ते राज्जा नैं बारा बरत लिए। ओ महलां मैं उलटा आ ग्या। राणी नैं देख्या तो हैरान रह गी। उसनैं यो सब किमै आच्छा कोन्नीं लाग्या।

परदेसी नैं चाही अक उसकी राणी भी अचार्य जी धोरै चाल्लै अर धरम की दिक्सा ले पर वा ना मान्नी। सराब पीणा अर मांस खाणा उन्नैं घणा भावै था। वा चाहवै थी, राज्जा भी न्यूं-ए करै। परदेसी के धरमातमा बणन तै वा भित्तर-ए-भित्तर घणी जलै थी। एक दन उसनैं राज्जा तै मारण की सोच्ची। धोके तै उसनै राज्जा तै जहर दे दिया।

राज्जा नै राणी पै छोह कोन्यां कर्या। इस बात तै उसका बिराग और भी घणा हो ग्या। ओ पौसधसाला मैं चल्या गया। राग-द्वेस तै छूट कै ओड़े-ए धरम-ध्यान मैं लाग ग्या। मरें पाछै ओ देव बण्या।

भूंडे अर करड़े बिचारां आला राज्जा भी साद्धू के सतसंग तै कितणी सहन करण आला अर कितणी दया करण आला बण ग्या था!

❑❑

भगवान का ध्यान

चम्पा नगरी मैं एक सेट रह्या करता। उसका नां था– अरहन्नक। अरहन्नक आपणा पीसा समाज की भलाई मैं खरच कर्या करै था। ओ जैन धरम मैं सरधा राक्खै था। नित-नेम कर्या करै था। नगरी का धन्ना सेट हो कै भी, उसमैं रत्ती-भर भी घमण्ड ना था।

एक बर अरहन्नक सेट ब्योपार करण खात्तर चाल पड़्या। उसकी गेल्यां घणे-ए मित्तर-प्यारे अर ढब्बी भी चाल पड़े। दूर का जाणा था अर समंदर का सफर था। कई दिन सफर मैं लागणे थे। सफर सरू हो ग्या। दो-चार दन तै सुथरी ढाळ बीत गे। कोए बिघन कोन्या पड़्या। फेर एक दन तुफान आ ग्या। नाव ऊंची-ऊंची खतरनाक लहरां पै ऊपर-तळै होण लाग गी। चारूं कान्नीं गाड़्ढा अंधेरा हो ग्या।

सब नै लाग्या अक ईब तै मरण-घाट पहोंच लिए। सारे आपणे-आपणे देवां नैं याद करण लाग गे।

नाव मैं एक आदमी ईसा था जिनैं मरण का माड़ा-मोट्टा भी डर भै ना था। ओ सान्ती तै बैठ्या था। इंग्घै-उंग्घै ना लखावै था। ओ था– सेट अरहन्नक! उस नैं मन मैं यो संकळप कर लिया अक या मुसीबत टळैगी तै मैं रोट्टी पाणी ल्यूंगा अर नहीं तै चारूं अहारां का त्याग सै। न्यूं सोच कै ओ भगवान का ध्यान करण लाग ग्या।

माड़ी वार पाछे उसनै एक अवाज सुणाई पड़ी- 'तू इस धरम नैं छोड दे। नहीं तै तेरी नाव इब्बै-ए समंदर मैं डूब ज्यागी। तू अर तेरे सारे

मित्तर-प्यारे डूब कै मर ज्यांगे।'

अरहन्नक बोल-बाला धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्‌या। फेर अवाज आई– ' मैं तन्नैं घणा-ए धन द्‌यूंगा। बस, एक बर तू धरम नैं झूट्‌ठा कह दे। माल्ला-माल हो ज्यागा।'

माल्ला-माल होण की खबर सुण कै भी अरहन्नक आपणे धरम तै माड़ा-सा भी कोन्यां डिग्या। धरम-ध्यान मैं लाग्या रह्‌या।

नाव मैं बैट्‌ठे होए ओर लोग जो डर की मारी थर-थर कांपैं थे, बोल्ले, "रै सेट्‌ठां कै सेट अरहन्नक! तू हात्थां तै यो मोक्का मत न्या लिकड़ण दे। दखे जान भी बच्चैगी अर धन भी मिल्लैगा। इस धरम नैं छोड दे।"

अरहन्नक ईब भी चुप था। ना उसनै डर लाग्गै था अर ना-ए धन के लोभ मैं ओ मर्‌या जा था। ओ तै बस, ध्यान-ए करता रह्‌या। घणी बार ताईं न्यूं-ए होंदी रही। नाव मैं सुआर डरे होए लोग्गां की सिमझ मैं या बात आई-ए कोन्यां अक अरहन्नक म्हारी चिन्ता क्यूं ना करदा। माड़ी वार ओर बीत गी।

सबनै देख्या अक एक देव अरहन्नक के सामीं हाथ जोड़े खड़्या सै। अरहन्नक नैं आंख खोल्ली। होट्‌ठां भित्तर हांस्या। बूज्झी, "हे देव! थम कुण सो? आड़े आण का कसट क्यूंकर कर्‌या?"

देव नैं कही अक "इन्दर म्हाराज ने देवां की सभा मैं थारी घणी बडाई करी थी। पर, मेरा जी कोन्यां टुक्या। थारा हिंतान लेण मैं आड़े आया था। समंदरी तूफान कुछ ना था, वा तै मेरी-ए माया थी। इंदर